==========

संस्तुति पत्र

==========

हम संस्तुति करते हैं कि, श्री. अजय वामन फरांदे द्वारा प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध – "भीष्म साहनी के "झरोखे" और "तमस" में प्रतिबिंबित यथार्थवाद" परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

प्रा. बी. डी. सगरे
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा

आर. जी. चव्हाण
प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री. अजय वामन फरांदे ने मेरे निर्देशन में "भीष्म साहनी के "झरोखे" और "तमस" में प्रतिबिंबित यथार्थवाद" यह लघु शोध प्रबंध एम्.फिल. की उपाधि के लिए तैयार किया है। उनकी यह मौलिक रचना है।

निर्देशक,
डॉ. व्यं. वा. कोटबागे
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय, वाई,
जि. सातारा (महाराष्ट्र)

वाई

दिनांक - 28/6/2000

==========

प्रतिज्ञापत्र

==========

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मेरे संशोधन का विषय "भीष्म साहनी के "झरोखे" और "तमस" में प्रतिबिंबित यथार्थवाद" सर्वथा मौलिक है। प्रस्तुतिकरण के पहले इस या अन्य विश्वविद्यालय में किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

सातारा

दिनांक : 28/06/2000

श्री. अजय वामन फरांदे
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा (महाराष्ट्र)

भूमिका

साहित्य की अनेक विधाएँ हैं। इन सभी साहित्यिक विधाओं का मानव जीवन से गहरा संबंध रहा है। परंतु साहित्य की "उपन्यास" एक ऐसी विधा है जो अन्य विधाओं की अपेक्षा मानव जीवन के सर्वाधिक निकट है। उपन्यास विधा मानो मानव जीवन का एक सच्चा दर्पण है। उपन्यास विधा के जन्म से ही यथार्थवाद उसका एक अंग बन गया है। और इसी यथार्थवादी प्रवृत्ति के कारण दूसरी विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा मानव जीवन से अधिक निकट है।

मैंने भी आज तक साहित्य की अनेक विधाओं का अध्ययन किया है, परंतु इन सभी विधाओं में उपन्यास विधा में ही मुझे मानव जीवन का सच्चा प्रतिबिंब मिला है। इन साहित्यिक विधाओं के अध्ययन पथ में मुझे अनेक लेखक–लेखिकाओं ने प्रभावित किया। परंतु मुझे सबसे अधिक प्रभावित करनेवाले लेखक है, उपन्यासकार "भीष्म साहनी"। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्यिक क्षेत्र के भीष्म साहनी एक प्रभावशाली व्यक्तित्व और प्रगतिशील हस्ताक्षर है। आपके साहित्य में आपकी मार्क्सवादी दृष्टि जगह जगह पर दृष्टिगोचर होती है। आपके उपन्यासों के केंद्र में मध्यमवर्ग तथा निम्न वर्ग ही रहा है। समाज के सामन्तवाद और पूँजीवाद का अन्तर्विरोध वर्ण और वर्ग का अन्तर्विरोध, आपके साहित्य में क्रमशः खुलता है। मानव जीवन की जटिलता को अत्यंत सफलता के साथ मार्क्सवादी दृष्टि से आपने दर्शकों के सामने स्पष्ट किया है। भीष्म साहनी एक ओर धार्मिक कुरीतियों का विरोध करते हैं वहीं दूसरी ओर आधुनिकतावाद की विसंगति और परायेपन के खिलाफ भी हैं। इस यथार्थवादी दृष्टि के साथ भीष्म साहनी मध्यम वर्ग का जीवन तथा साम्प्रदायिकता का सच्चा स्वरूप प्रकट करते हैं। इस स्वरूप को स्पष्ट करने की दृष्टि से उनके उपन्यास अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और उनमें भी महत्वपूर्ण उपन्यास हैं – "झरोखे" और "तमस"। मैंने आपके इन्हीं दो उपन्यासों का यथार्थवाद की दृष्टि से अध्ययन किया है।

भीष्म साहनीजी के उपन्यास साहित्य का प्रभाव और मेरे आदरणीय गुरूवर्य डॉ.श्री.व्यं.वा.कोटबागेजी की प्रेरणा से ही मैं प्रस्तुत लघु प्रबंध पूरा कर सका। प्रस्तुत विषय को लेकर मेरे गुरूवर्य श्री.व्यं.बा.कोटबागेजी ने मुझे सुयोग्य मार्गदर्शन किया, इसलिए मैं उनका हृदय से ऋणी हूँ। श्री.पी.एस.पाटील, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर, डॉ.बी.डी.सगरे, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग प्रमुख, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, तथा डॉ.सौ.छायादेवी घोरपडे, डॉ.श्री.एच.जी.साळुंखे, छ.शिवाजी महाविद्यालय, सातारा इनकी सहायता के लिए मैं उनका भी कृतज्ञ हूँ। साथ ही प्रा.जयवंत जाधव, प्रा.झेड.एच.मुलाणी, इनकी सहायता के लिए मैं कृतज्ञ हूँ। अध्ययन में सहायता करनेवाले श्री.एस.ई.जगताप, ग्रंथपाल लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, श्री.गायकवाड, ग्रंथपाल, छ.शिवाजी महाविद्यालय, सातारा तथा इनके सहयोगी कर्मचारियों का भी मैं ऋणी हूँ। विशेष रूप से मा.प्राचार्य श्री.आर.जी.चव्हाण, लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा का भी मैं आभारी हूँ, क्योंकि उन्होंने मुझे उच्च शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा दी। मुझे जिन लेखकों एवं विद्वानों के किताबों की सहायता मिली मैं उन सबका कृतज्ञ हूँ।

मैं मेरे माता–पिता श्री.वामन फरांदे और सौ.उषा फरांदे का अत्यंत ऋणी हूँ क्योंकि उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से मैं यहाँ तक उच्च शिक्षा प्राप्त कर सका। इसके अलावा मेरे इस शोधकार्य को अधिक प्रोत्साहित करनेवाले मेरे बडे भाई महेश और अतुल का भी मैं ऋणी हूँ, जिन्होंने इस शोधकार्य में मेरी मदद की है।

इसके अतिरिक्त कु.विद्या ल. देशमुख, विद्या क. देशमुख, मीना शिंदे, साधना बल्लाळ, श्री.संजय येवले, श्री.संतोष कदम, राजेश पवार आदि मेरे सहकारियों ने इस शोध कार्य में मेरी प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष सहायता की है। इन सबके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

अंत में इस लघु शोध प्रबंध को अत्यंत कम समय में टंकीत करनेवाले मे.रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री. मुकुंद ढवले जी का कृतज्ञ हूँ।

सातारा

दिनांक 28|06|2000

श्री. विजय वामन फरांदे